







श्री शारदा सहस्रनाम  
स्तोत्रम्





ॐ

॥ श्री शारदा विजयतेतराम् ॥

# श्री शारदा सहस्रनाम स्तोत्रम्

[ नामावलि सहितम् ]



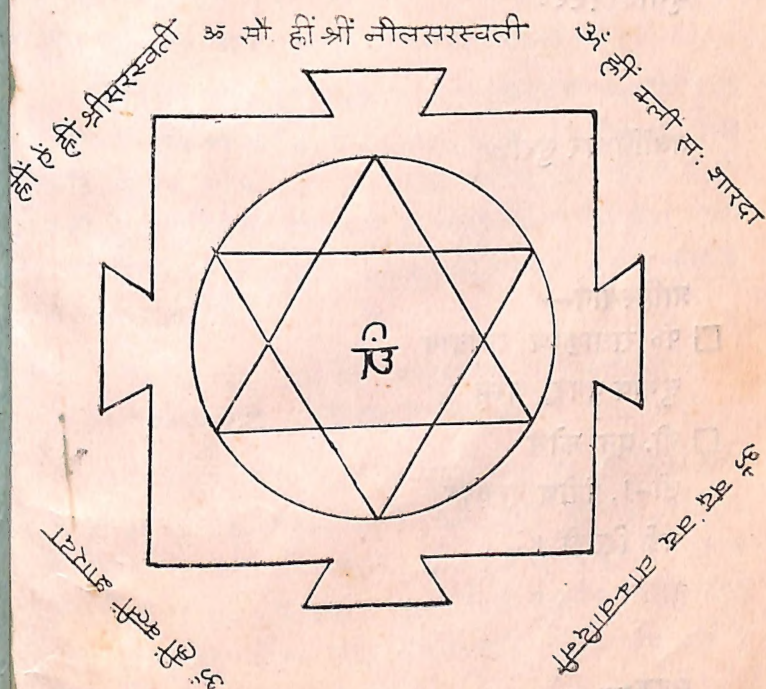
संकलनकर्ता : स्वामी सच्चिदानन्द पुरी







# श्रीशारदा सहस्र नामावली



नामावली कर्ता

रामो सच्चिदानन्दपुरी (चैतन्य)

**प्रकाशक—**

स्वामी सच्चिदानन्द पुरी

प्रथम संस्करण—१००० प्रतियाँ

जुलाई १९६४

सर्वाधिकार सुरक्षित

**प्राप्तिस्थान—**

☐ पं० राधाकृष्ण राजदान

सुभाष नगर, जम्मू

☐ बी. एन. कोल

डी-१, पंपोश एन्क्लेव

नई दिल्ली ।

**मुद्रक—**

श्रीहरिनाम प्रेस, बाग बुन्देला, लोई बाजार, वृन्दावन.



## किञ्चित् वक्तव्य

अपार अथाह संसार सागर अनादि और अनन्त है । जिसे पार करने के लिये ऋषि, मुनि और भक्तगण निरन्तर घोर तपस्या और साधन कर देवी-देवताओं से इष्ट सिद्धि प्राप्त करते थे । वही मार्ग आज तक चल रहा है और चलता रहेगा ।

हिमालय की गोदी में कश्यप ऋषि के द्वारा बसाया गया कश्मीर ऋषि-मुनियों का तपोभूमि है । यहाँ देव, गन्धर्व, यक्ष और किन्नर लीला स्थल है । इसी कारण इसे 'भूतल स्वर्ग' कहा है । शाण्डिल्य ऋषि ने भी कई वर्षों तक शारदा देवी प्रसन्न करने के लिये तपस्या की । इस बातको भगवती भैरवी भगवान् भैरव से कहती है—

भगवन् या महादेवी शारदाख्या सरस्वतो ।

काश्मीरस्यां स्वतपसा शाण्डिल्येनावतारिता ॥

अब बात यह है कि काश्मीर प्रान्त बहुत दूर तक फैला हुआ था आधा वर्तमान पाकिस्तान में चला गया उसी के अन्तर्गत शाण्डिल्य का तपोभूमि शारदा पीठ (कृष्ण गङ्गा के तटपर स्थित) चला गया । ई. सन्. १९४७ से पहले देश-देशान्तरके भक्त जन श्रीशारदा जी का दर्शन करने जाते रहे अब वह स्थान हमारे लिये दर्शन दुर्लभ हो गया ।

आदि जगद्गुरु शंकराचार्य जो महाराज काश्मीरस्थ श्रीशारदा पहुँच कर घोर तपस्या करके शारदा जी को दक्षिण-

देश ले गये और कर्नाटक प्रान्त में स्थिर किया। आज भी वहाँ 'मुखाम्बिका' नाम से प्रसिद्ध है। शारदा पीठकी अधिष्ठात्रि देवता 'मेधाशक्ति' मानी जाती है। देवी के शक्ति स्थल पीठ में चौथा स्थान यही माना जाता है। इसकी शक्ति महामाया-मेधा और भैरव त्रिसन्देश्वर है। परम्परा मे यह स्थान काश्मीर राजा के संरक्षण में था। यहाँ शारदा नाम का गांव भी है। आस पास में गुर्जर जाति निवास करते हैं और इस स्थान पर अत्यन्त आदर और श्रद्धा रखते हैं। यहाँ के पुजारी जी कहते हैं कि फसल निकलते ही कुछ अनाज देवी के आँगन में छोड़ जाते थे। इसी तरह गाय का दूध देवीके सामने कृष्ण गङ्गा में छोड़ते थे।

इस दर्शनीय स्थान की यात्रा भाद्रपद शुक्लपक्ष चतुर्थी को आरम्भ होती है और अष्टमी के दिन पहुँच कर विशेष रूप से पूजा करते थे। यहाँ पशु बलि का विशेष महत्व है। इसलिये यहाँ बलि चढ़ाते हैं। यात्रा बहुत कठिन है। कुछ लोग इस शारदा को इङ्गला या मङ्गला नाम से पुकारते हैं परन्तु यह नाम मुजफराबाद (आज पाकिस्तान में) के कुछ आस-पास के लोग कहते हैं परन्तु कश्मीर में शारदा या शारदा पीठ से प्रसिद्ध है। इस स्थान पर पहुँचने के लिये तीन रास्ते हैं। अधिक तरह लोग टिकर या त्रगांव से निकलते हैं यह दोनों रास्ते पर्वत घाटियों से गुजरते हैं रास्ते में बटपुरा, गोतमडोर, गणेशपुर आदि छोटे छोटे गाँवों को पार करते हुये रास्ते में रुद्रवन भी मिलता है आगे चलकर दुधिनाला जाकर कृष्ण गङ्गा पार कर शारदा पहुँचते हैं। शारदा मन्दिर ऊँचे पहाड़ पर है। मन्दिर तक ६४ (चौसठ) सीढ़ियाँ हैं यह ६४ योगिनियों



कै नाम से जाना जाता है। तीसरा रास्ता बाराहमुला से उड़ी, उड़ी से मुजफराबाद होकर शारदा पहुँचते हैं। यह रास्ता लम्बा और बहुत समय लगता है प्रायः सब लोग टिकर से हो जाते हैं।

अब यह सब स्मरण मात्र ही रह गया है। जो भी हो मेरा लक्ष्य शारदा सहस्रनाम स्तोत्र से है। आज भी काश्मीर की जनता शारदा अष्टमी अवश्य मनाते हैं, उस दिन यज्ञ-याग पूजा पाठ अवश्य करते हैं। लेकिन यज्ञ में शारदा सहस्रनाम पढ़ने की पृथा है इसके अभाव में राजा या भवानी सहस्रनाम पाठ करते हैं। मैं शारदा सहस्रनाम की खोज में कश्मीर के बहुत से पण्डित वर्ग से सम्पर्क किया लेकिन जवाब यही मिला कि "हमारा पाठ शारदाके साथ ही चला गया।" दुःख तो बहुत हुआ, परन्तु प्रयास जारी रखा ई. सन् १९७५ में श्रीमान राधा कृष्ण राजधान (बांडिपुरा कलूसा) के यहां से हस्तलिपि शारदा अक्षरों में प्राचीन छोटी सी पुस्तिका मिली, इसी के सहारे नागरी लिपि में अनुवर्द्धित करने का सुअवसर मिला। प्राचीन पुस्तक होने के कारण कुछ अक्षर मिट गये, उन सबको यथा योग्य सुसज्जित कर प्रकाश में लाया हूँ। इसके अनन्तर विद्वानों को दिखाया उनका आशीर्वाद भी मिलेगा। श्रद्धेय लाल पुरी जी महाराज भी पढ़कर बहुत प्रसन्न हुये और छापने को प्रेरणा दी। शारदा सहस्रनामवाली भी बनाया हूँ जिसे यज्ञ में भी और अर्चना में भी सदुपयोग हो सके। नामावली सहस्र से अधिक ही आती है कारण यह है कि श्लोक मात्रा अधिक है। खैर मैं यही सोचता हूँ कि भगवती की इच्छा से ही सब कुछ हुआ। श्रीराधाकृष्ण राजदान को धन्यवाद देता हूँ प्रथम

सहयोग उनका ही है सपरिवार को भगवती का आशीर्वाद मिलता रहे। परम पूज्य गुरुमहाराज की कृपा से मेरा प्रयास आप तक पहुँचा है, इसका श्रेय श्रीगुरु चरणों में समर्पित हो। पाठक को भी इष्ट सिद्धि हो।

वर्तमान काश्मीर दुर्दान्तों में फंसा हुआ है और तीक्ष्ण नखों में विदीर्ण हो रहा है। सब कुछ बिखर चुका है। अब सरकार की ओर मुँह ताक रही जनता यह सोच रही है कि खोई हुई जमीन जायदाद और तीर्थ स्थलों का दर्शन हो। भगवती मेधा शक्ति सबको सदबुद्धि दे, इस त्रास से मुक्ति मिले।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

विदुषां वशंवदः  
स्वामी सच्चिदानन्द पुरी  
सन्यास आश्रम  
श्रीशिव मन्दिर  
वाडिपुर (काश्मीर)







श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य  
श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पूज्यपाद  
श्री १०८ श्रीस्वामी प्रेमानन्दपुरी जी महाराज  
(मौनी बाबाजी कश्मीर वाले)

कालातीतं कालकरालं कलिनाशं,  
 कश्मीरस्थं कामकुठारं काशीशम् ।  
 ब्रह्मानन्दं ब्रह्मस्वरूपं ब्रह्मर्षि,  
 वन्दे मौनिं योगारूढं गुरुमूर्तिम् ॥४॥  
 एकं पूर्णं निर्मलहृदयमद्वैतम्,  
 मायातीतं मोक्षोपायं परिव्राजम् ।  
 विष्णुं चक्रुं परमाराध्य परमेशम्,  
 वन्दे मौनिं शिष्याराध्यं यतिपादम् ॥५॥





ॐ

श्रीगणेशाय नमः

ॐ नमः

श्रीशारदाविजयतेतराम्

ॐ गुरवे नमः

## अथ श्रीशारदासहस्रनामस्तोत्रम्

भैरवी उवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वलोकनमस्कृतः ।  
सर्वागमैक तत्त्वज्ञ तत्त्वसागर पारग ॥  
कृपापरोऽसि देवेश शरणागत वत्सल ।  
पुरामह्यं वरो दत्तो देवदानव संगरे ॥  
तमद्य भगवन्त्वत्तो याचेऽहं परमेश्वर ।  
प्रयच्छ त्वरितं शम्भो यद्यहं प्रेयसीतव ॥

भैरव उवाच

देव देवि पुरासत्यं सुरासुर रणेजिरे ।  
वरो दत्तो मया तेऽद्य वरं याचस्ववाञ्छितम् ॥

भैरवी उवाच

भगवन् या महादेवी शारदाख्या सरस्वती ।  
काश्मीरस्यां स्वतपसा शाण्डिल्येनावतारिता ॥

तस्या नाम सहस्रं मे भोगमोक्षैक साधनम् ।  
साधकानां हितार्थाय वदत्वं परमेश्वर ।

भैरव उवाच

रहस्यमेतदखिलं देवानां परमेश्वरि ।  
परापर रहस्यं च जगतां भुवनेश्वरि ॥  
या देवी शारदाख्येति जगन्माता सरस्वती ।  
पञ्चाक्षरी च षट्कूट त्रयैलोक्य प्रथिता सदा  
तया ततमिदं विश्वं तया सम्पाल्यते जगत् ।  
सेवस्वं हरते चान्ते सैवं मुक्तिप्रदायिनी ॥  
देव देवी महाविद्या परतत्त्वैक रूपिणी ।  
तस्यानाम सहस्रं ते वक्ष्येऽहं भक्तिसाधनम् ॥  
त्रिवर्ग फलदं गोप्यं साधके च प्रदायकम् ।

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीशारदा भगवती सहस्रना  
मन्त्रस्य श्रीभगवान् भैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्द  
पञ्चाक्षरी शारदा भगवती देवता, क्लीं बीज  
ह्रीं शक्तिः, नम इति कीलकं, त्रिवर्ग फ  
सिध्यर्थं श्रीशारदासहस्रनामपाठे विनियोगः ।



अथ करन्यास :

हा कला अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं क्लीं  
तर्जनीभ्यां नमः, हूं क्लूं मध्यमाभ्यां नमः, ह्रै  
क्लै अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं क्लौं कनिष्ठकाभ्यां  
नमः, हः कलः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यासः

हाँ कलाँ हृदयाय नमः ह्रीं क्लीं शिरसे  
स्वाहा, हूं क्लूं शिखायै वषट्, ह्रै क्लै कवचाय  
हुम्, ह्रौं क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, हः कलः अस्त्राय  
फट्, ॐ भूर्भुव स्वरोमिति दिग्बन्धनम् ।

अथ ध्यानम्

शक्तिचाप शरघण्टिका सुधापात्र-

रत्नकलशाल्लसत्कराम् ।

पूर्णचन्द्रवदनां त्रिलोचनां-

शारदां नमत सर्वसिद्धिदाम् ॥

श्री श्रीशैलस्थिता या प्रहसितवदना पार्वती-  
शूलहस्ता । वह्निसूर्येन्दुनेत्रा त्रिभुवनजननी  
षड्भुजा सर्वशक्तिः । शाण्डिल्येनोपनीता जयति

भगवती भक्तिगम्या नतानाम् । सा नः सिंहा-  
सनस्था ह्यभिमतफलदा शारदा शं करोतु ।

लं इत्यादि पूजा

लं पृथिवी तत्त्वात्मिकायै श्रीशारदा देव्यै  
गन्धं लेपयामि, हं आकाश तत्त्वात्मिकायै  
~~श्रीशारदा~~ श्रीशारदा देव्यै पुष्पं समर्पयामि, यं  
वायुतत्त्वात्मिकायै श्रीशारदादेव्यै धूपं आघ्रा-  
पयामि, रं वह्नि तत्त्वात्मिकायै श्रीशारदा देव्यै  
दीपं दर्शयामि, वं अमृत तत्त्वात्मिकायै श्रीशारदा  
देव्यै अमृत नैवेद्यं निवेदयामि स सर्वतत्त्वा-  
त्मिकायै श्रीशारदा देव्यै ताम्बूलादि सर्वोपचा-  
रान्समर्पयामि ॥

मुद्रा :—योनिमुद्रां दर्शयेत् ।

श्रीशारदा गायत्री :—ॐ शारदायै विद्महे  
वरदायै धीमहि मोक्षदायिनी प्रचोदयात् ।

अथ ध्यानम् ।

शक्तिः शरचापघण्टिका सुधा-

पात्र रत्नकलशोल्लसत्कराम् ।

पूर्णचन्द्रवदनां त्रिलोचनां

शारदां नमतः सर्वसिद्धिदाम् ॥

मन्त्र :—ह्रीं क्लीं शारदा

—: श्रीशारदासहस्रनामस्तोत्रम् :—

ॐ ह्रीं क्लीं शारदा शान्ता श्रीमती श्रीशुभङ्करी  
 शुभा शान्ता शरद्वीजा श्यामिका श्यामकुन्तला ॥  
 शोभावती शशाङ्केशी शातकुम्भप्रकाशिनी ।  
 प्रताप्या तापिनी ताप्या शीतला शेषशायिनी ॥  
 श्यामा शान्तिकरी शान्तिः श्रीकरी वीरसूदिनी ।  
 वेश्या वेश्यकरी वेश्या वानरी वेपमान्विता ॥  
 वाचाली शुभगा शोभ्या शोभना शुचिस्मिता ।  
 जगन्माता जगद्धात्री जगत्पालनकारिणी ॥  
 हारिणी गदिनी गोधा गोमती जगदाश्रया ।  
 सौम्या याम्या तथा काम्या वाम्या वाचामगोचरा ॥  
 ऐंद्री चान्द्री कलाकान्ता शशिमण्डलमध्यगा ।  
 आग्नेयी वारुणी वाणी कारुणाकरुणाश्रया ॥  
 नैऋति नृतरूपा च वायवी वाग्भवोद्भवा ।  
 कौवेरी कूवरी कोला कामेशी कामसुन्दरी ॥



खेशानी केशनीकारा मोचनी धेनुकामुदा ।  
 कामधेनु कपलेशी कपालकरसंयुक्ता ॥  
 चामुण्डा मूल्यदामूर्ति मुण्डमालाविभूषणा ।  
 सुमेरुतनया वन्द्या चण्डिका चण्डसूदिनी ॥  
 चण्डांसु तंजसीमूर्तिश्चण्डेशी चण्डविक्रमा ।  
 चाटुका चाटकी चर्ची चारुहंसा चमत्कृतिः । १० ।  
 ललज्जिह्वा सरोजाक्षी मुण्डस्रक् मुण्डधारिणी ।  
 सर्वानन्दमयी स्तुत्या सकलानन्दवर्धिनी ॥  
 धृतिः कृतिः स्थितिमूर्तिः द्यौवासा चारुहासिनी ।  
 रुक्माङ्गदा रुक्मवर्णा रुक्मिणी रुक्मभूषणा ॥  
 कामदा मोक्षदानन्दा नारसिंही नृपात्मजा ।  
 नारायणी नरोत्तुङ्गा नागिनी नगनन्दिनी ॥  
 नागश्री गिरिजा गुह्या गुह्यकेशी गरीयसी ।  
 गुणाश्रया गुणातीता गजराजोपरिस्थिता ॥  
 गजाकारा गणेशानी गणगन्धर्वसेविता ।  
 दीर्घकेशी सुकेशी च पिंगला पिंगलालका । १५ ।  
 भयदा भवमान्या च भवानी भवतोषिता ।  
 भवालस्या भद्रधात्री भीरुण्डा भगमालिनी ॥

पौरन्धरी परञ्ज्योतिः पुरन्धर समर्चिता ।  
 प्रीना कीर्तिकरी कीर्त्तिः केयूराद्या महाकचा ॥  
 घोररूपा महेशानी कोमलाकोमलालका ।  
 कल्याणी कामना कुब्जा कनकाङ्गदभूषिता ॥  
 केनाशी बदाकाली महामेधा महोत्सवा ।  
 विरूपा विश्वरूपा च विश्वधात्री पिलंपिला ॥  
 पद्मावती महापुण्या पुण्यापुण्यजनेश्वरी ।  
 जट्टुकन्या मनोज्ञा च मानसी मनुपूजिता ॥२०॥  
 कामरूपा कामकला कमनीया कलावती ।  
 वैकुण्ठपत्नी कमला शिवपत्नी च पार्वती ॥  
 काम्यसी गारुडीविद्या विश्वसू वीरुसू दितिः ।  
 माहेश्वरी वंष्णवी च ब्राह्मी ब्राह्मणपूजिता ॥  
 मान्या मानवती धन्या धनदा धनदेश्वरी ।  
 अपर्णा पर्णशिथिला पर्णशालापरम्परा ॥  
 पद्माक्षी नीलवस्त्रा च निम्नानीलपताकिनी ।  
 दयावती दयाधीरा धैर्यभूषण भूषिता ॥  
 जलेश्वरी मल्लहन्त्री भल्लहस्तामलापहा ।  
 कौमदी चैव कौमारी कुमारी कुमुदाकरा ॥२१॥

पद्मिनी पद्मनयना कुलजा कुलकौलिनी  
 कराला विकरालाक्षी विसंभा दुरदुराकृतिः ।  
 वनदुर्गा सदाचारा सदाशान्ता सदाशिवा  
 सृष्टिः सृष्टिकरी साध्वी मानुषी देवकीद्युतिः ।  
 वसुदा वासवी वेणुः वाराही चापराजिता  
 रोहिणी रमणारामा मोहिनी मधुराकृतिः ।  
 शिवशक्तिः पराशक्तिः शाङ्करी टङ्कधारिणी  
 शङ्कावङ्कालमालाद्या लङ्काकङ्कण भूषिता ।  
 दैत्यापहरा दीप्ता दासोज्ज्वलकुचाग्रणी  
 क्षान्ती क्षौमङ्करी बुद्धिः बोधाचारपरायणा । ३० ।  
 श्रीविद्या भैरवीविद्या भारती भयघातिनी  
 भीमा भीमारवा भैमी भङ्गुरा क्षणभङ्गुरा ॥  
 जित्या पिनाक भृत्सैन्या शङ्खिनी शङ्खरूपिणी ।  
 देवाङ्गना देवमान्या दैत्यसूः दैत्यमदिनी ॥  
 देवकन्या च पौलोमी रतिः सुन्दरदोस्तटी ।  
 सुखिनी शौकिनी शौक्ली सर्वसौख्यविवर्धिनी ॥  
 लोलालीलावती सूक्ष्मा सूक्षासूक्ष्मगतिर्मतिः ।  
 वरेण्या वरदा वेणी शरण्या शरचापिनी ॥



उग्रकाली महाकाली महाकालसमर्चिता ।  
 ज्ञानदा योगिध्येया च गोवल्ली योगवर्धिनी ॥३५॥  
 पेशला मधुरा माया विष्णुर्माया महोज्ज्वला ।  
 वाराणसी तथाऽवन्ती कान्ती कुक्कुरक्षेत्रसुः ॥  
 अयोध्या योगसूत्राद्या यादवेशी यदुप्रिया ।  
 यमहन्त्री च यमदा यमिनी योगवर्तिरा ॥  
 भस्मोज्ज्वला भस्मशय्या भस्मकालीसमर्चिता ।  
 चंद्रिका शूलिनी शिल्या प्राशिनी चन्द्रवासिनी ॥  
 पद्महस्ता च पीना च पाशनी पाशमोचनी ।  
 सुधाकलशहस्ता च सुधामूर्ति सुधामयी ॥  
 व्यूहायुधा वरारोहा वरधात्री वरोत्तमा ।  
 पापाशना महामूर्ता मोहदा मधुरास्वरा ॥४०॥  
 मधुपा माधवी माल्या मल्लिका कालिकामृगी ।  
 मृगाक्षी मृगराजस्था केशिके नाशधातिनी ॥  
 रक्ताम्बरधरा रात्रिः सुकेशी सुरनायिका ।  
 सौरभी सुरभिः सूक्ष्मी स्वयम्भू कुसमर्चिता ॥  
 अम्बा जम्भा जटाभूषा जूटिनी जटिनी नटी ।  
 मर्मनन्दजा ज्येष्ठा श्रेष्ठा कामेष्ठवर्द्धिनी ॥

रौद्री रुद्रस्तना रुद्रा शतरुद्रा च शाम्भवो  
 श्रविष्ठा शितिकण्ठेशी विमलानन्दवर्धिनी ॥  
 कर्पदिनी कल्पलता महाप्रलयकारिणी  
 महाकल्पान्तसंहृष्टा महाकल्पक्षयङ्कुरी ॥४५॥  
 सम्बर्ताग्निप्रभसेव्या सानन्दानन्दवर्धिनी  
 सुरसेना च मारेशी सुराक्षीववरोत्सुका ॥  
 प्राणेश्वरी पवित्रा च पावनी लोकपावनी  
 लोकधात्री महाशुक्ला शशिराचलकन्यका ॥  
 तमोघ्नीध्वान्तसंहव्री यशोदा च यशशिवनी  
 प्रद्योतनी च द्युमती धीमती लोकचर्चिता ॥  
 प्रणवेशी परगतिः पारावारसुतासमा  
 डाकिनी शाकिनी रुद्धा नीलानागाङ्गनानुतिः ॥  
 कुन्दद्युतिश्चकुरटा कांतिदा भ्रान्तिदा भ्रमा  
 चर्विता चर्विता गोष्ठी गजाननसमर्चिता ॥५०॥  
 खगेश्वरी खनीला च नादिनी खगवाहिनी  
 चन्द्रानना महारुण्डा महोग्रा मीनकन्यका ॥  
 मानप्रदा महारूपा महामाहेश्वरीप्रिया  
 मरुद्गणा महद्वक्त्रा महोरगा भयानका ॥

महाघोणा करेशानी मार्जारी मन्मतोज्ज्वला ।  
 कर्त्री हन्त्री पालयत्री चण्डमुण्डनिशूदिनी ॥  
 निर्मला भास्वती भीमा भद्रिका भीमविक्रमा ।  
 गङ्गा चन्द्रावती दिव्या गोमती यमुनानदी ॥  
 विपाशा सरयूस्तापी वितस्ता कुङ्कुमाचिता ।  
 गण्डकी नर्मदा गौरी चन्द्रभागा सरस्वती ॥५॥  
 तुरावती च कावेरी शतहवा शतहदा ।  
 श्वेतवाहनसेव्या च स्वेतस्या स्मितभाविनी ॥  
 कौशाम्बी कोशदा कोश्या काश्मीरकनकेलिनी ।  
 कोमला च विदेहा च पूः पुरी पुरसूदिनी ॥  
 पौरुषा पलापाली पीवराङ्गी गुरुप्रिया ।  
 पुरारिः गृहिणी पूर्णा पूर्णरूपा रजस्वला ॥  
 सम्पूर्णचन्द्रवदना बालचन्द्रसमद्युतिः ।  
 रेवती प्रेयसी रेवा चित्राचित्राम्बराचमूः ॥  
 नवपुष्पसमुद्भुता नवपुष्पैकहारिणी ।  
 नवपुष्पससाम्रला नवपुष्पकुलावना ॥६०॥  
 नवपुष्पोद्भप्रतीता नवपुष्पसमाश्रया ।  
 नवपुष्पललत्केशा नवपुष्पललत्मुखा ॥



नवपुष्पललत्कर्णा	नवपुष्पललत्कटिः ।
नवपुष्पललन्नेत्रा	नवपुष्पललन्नसा ॥
नवपुष्पसमाकारा	नवपुष्पललद्भुजा ।
नवपुष्पललत्कण्ठा	नवपुष्पार्चितस्तनी ॥
नवपुष्पललन्मध्या	नवपुष्पकुलालका ।
नवपुष्पललन्नाभिः	नवपुष्पललद्भगा ॥
नवपुष्पललत्पादा	नवपुष्पकुलाङ्गिनी ।
नवपुष्पगुणोत्पीठा	नवपुष्पोपशोभिता ॥६५॥
नवपुष्पप्रियाप्रेता	प्रेतमण्डलमध्यगा ।
प्रेतासनाप्रेतगतिः	प्रेतकुण्डलभूषिता ॥
प्रेतबाहुकरा	प्रेतशय्याशयनशायिनी ।
कुलाचारा	कुलेशानी कुलका कुलकौलिनी ॥
श्मशानभैरवी	कालभैरवी शिवभैरवी ।
स्वयम्भू भैरवी	विष्णुभैरवी सुरभैरवी ॥
कुमारभैरवी	बालभैरवी रुद्रभैरवी ।
शशाङ्कभैरवी	सूर्यभैरवी वह्निभैरवी ॥
शोभादिभैरवी	मायाभैरवी लोकभैरवी ।
महोग्रभैरवी	साध्विभैरवी मृतभैरवी ॥७०॥

सम्मोहभैरवी शब्दभैरवी रसभैरवी ।  
 समस्त भैरवी देवीभैरवी मन्त्रभैरवा ॥  
 सुन्दराङ्गी मनोहन्त्री महाश्मशानसुन्दरी ।  
 सुरेशसुन्दरी देवसुन्दरी लोकसुन्दरी ॥  
 त्र्यलोक्यसुन्दरी ब्रह्मसुन्दरी विष्णुसुन्दरी ।  
 गिरीशसुन्दरी कामसुन्दरी गुणसुन्दरी ॥  
 आनन्दसुन्दरी वक्त्रसुन्दरी चन्द्रसुन्दरी ।  
 आदित्यसुन्दरी वीरसुन्दरी वह्निसुन्दरी ॥  
 पद्माक्षसुन्दरी पद्मसुन्दरी पुष्पसुन्दरी ।  
 गुणदासुन्दरी देवीसुन्दरी पुरसुन्दरी ॥७५॥  
 महेशसुन्दरी देवीमहात्रिपुरसुन्दरी ।  
 स्वयम्भूसुन्दरी देवीस्वयम्भूपुष्पसुन्दरी ॥  
 शुक्रैकसुन्दरी लिङ्गसुन्दरी भगसुन्दरी ।  
 विश्वेशसुन्दरी विद्यासुन्दरी कालसुन्दरी ॥  
 शुक्रेश्वरी महाशुक्रा शुक्रतर्पणतर्पिता ।  
 शुक्रोद्भवा शुक्ररसा शुक्रपूजनतोषिता ॥  
 शुक्रात्मिका शुक्रकरी शुक्रस्नेहा च शुक्रिणी ।  
 शुक्रसेव्या सुराशुक्रा शुक्रलिसामनोन्मना ॥

शुक्रहारा सदाशुक्रा शुक्ररूपा च शुक्रजा ।  
 शुक्रसूः शुक्ररम्याङ्गी शुक्राशुकृविर्वाधिनी ॥८०॥  
 शुकूत्तमा शुक्रपूजा शुक्रेशी शुक्रवल्लभा ।  
 ज्ञानेश्वरी भगोत्तुङ्गा भगमालाविहारिणी ॥  
 भगलिङ्गकरसिका लिङ्गिनी भगमालिनी ।  
 वैदवेशी भगाकारा भगलिङ्गादिशुकूसूः ॥  
 वात्याली वनिता वात्यारूपिणी मेघमालिनी ।  
 गुणाश्रय गुणवती गुणगौरवसुन्दरी ॥  
 पुष्पतारा महापुष्पा पुष्टि परमलघुजा ।  
 स्वयम्भू पुष्पसंकाशा स्वयम्भूपुष्पपूजिता ॥  
 स्वयम्भूकुसुमन्यासा स्वयम्भूकुसुमार्चिता ।  
 स्वयम्भूपुष्पसरसी स्वयम्भूपुष्पपुष्पिणी ॥८१॥  
 शुकृप्रिया शुकृरता शुकृमज्जनतत्परा ।  
 अपानाप्राणरूपा च व्यानोदानस्वरूपिणी ॥  
 प्राणदा मदिरामोदा मधुमत्ता मदोद्धता ।  
 सर्वाश्रया सर्वगुणा अवस्था सर्वतोमुखी ॥  
 नारीपुष्पसमप्राणा नारीपुष्पसमत्सुका ।  
 नारीपुष्पलतानारी नारीपुष्पसजार्चिता ॥



षड्गुणा षड्गुणातीता षोडशीशशिनाकला ।  
 चतुर्भुजा दशभुजा चाष्टादशभुजास्तथा ॥  
 द्विभुजा चैकषट्कोणा त्रिकोणनिलयाश्रया ।  
 स्रोतस्वती महादेवी महारौद्री दुरान्तका । ६०।  
 दीर्घनासा सुनासा च दीर्घजिह्वा च मौलिनी ।  
 सर्वाधारा सर्वमयी सारसी सरलाश्रया ॥  
 सहस्रनयनाप्राणा सहस्राक्षसमचिता ।  
 सहस्रशीर्षा सुभटा शुभाक्षा दक्षपुत्रिणी ॥  
 षष्टिका षष्टिचक्रस्था षट्वर्गफलदायिनी ।  
 अदितिदितिरात्मा श्रीराद्या चाङ्गुभचक्रिणी ॥  
 भरणी भगबिम्बाक्षी कृत्तिका चेक्षवसादिता ।  
 इतश्रीः रोहिणी चेष्टिः चेष्टामृगशिरोधरा ॥  
 ईश्वरी वाग्भवी चान्द्री पौलोमी मुनिसेविता ।  
 उमा पुनर्जाया जारा चोष्महन्धा पुनर्वसुः । ६१।  
 चारुस्तुत्या तिमिस्थान्ती जाडिनी लिप्तदेहिनी ।  
 लिङ्ग्या श्लेश्मतरा श्लिष्टा मधवार्चितपादुकी ॥  
 मघामोघा तथैणाक्षी ऐश्वर्यपददायिनी ।  
 ऐंकारी चन्द्रमुकुटा पूर्वाफाल्गुणिकीश्वरी ॥

उत्तराफल्गुहस्ता च हस्तिसेव्यासमेक्षणा  
 ओजस्विनी तथोत्साहा चित्रिणी चित्रभूषणा  
 अम्भोजनयना स्वातिः विशाखा जननीशिखा  
 अकारनिलयाधारा नरसेव्या च ज्येष्ठदा  
 मूलापूर्वादिशाठेशी चोत्तराषाढ्यावनी  
 श्रवणा धर्मिणी धर्म्या धनिष्ठा च शतभिषक् १०  
 पूर्वाभाद्रपदस्थानाप्यातुरा भद्रपादिनी  
 रेवतीरमणास्तुत्या नक्षत्रेशसमर्चिता  
 कन्दर्पदर्पिणी दुर्गा कुरुकुलकपोलिनी  
 केतकीकुसुमस्निग्धा केतकीकृतभूषणा  
 कालिकाकालरात्रिश्च कुटुम्भजनतपिता  
 कञ्जपत्राक्षिणी कल्यारोपिणी कालतोषिता  
 कर्पूरपूर्णवदना कचभारनतानना  
 कलानाथकलामौली कलाकलिमलापहा  
 कादम्बिनीकरिगतिः करिचक्रसमर्चिता  
 कञ्जेश्वरी कृपारूपा करुणामृतवर्षिणी ॥ १०५ ॥  
 खर्वा खद्योतरूपा च खेडेशी खड्गधारिणी  
 खद्योतचञ्चलाकेशी खेचरी खेचरार्चिता

गदाधारी मायागुर्वी गुरुपुत्री गुरुप्रिया ।  
 गीतावाद्यप्रियागाथा गजवक्त्रप्रसूगतिः ॥  
 गरिष्ठगणपूज्या च गूढगुल्फा गजेश्वरी ।  
 गजमान्या गणेशानी गाणपत्यफलप्रदा ॥  
 घर्माशुनयना घर्म्या घोराघुर्घरनादिनी ।  
 घटस्तनी घटाकारा घुसृणकुल्लितस्तनी ॥  
 घोरारवा घोरमुखी घोरदैत्यनिर्बहिणी ।  
 घनछाया घनद्युतिः घनवाहनपूजिता ॥११०॥  
 टक्काटेशरूपा च चतुराचतुरस्तनी ।  
 चतुराननपूज्या च चतुर्भुजसमर्चिता ॥  
 चर्माम्बराचरगतिः चतुर्वेदमयीचला ।  
 चतुसमुद्रशयना चतुर्दशसुरार्चिता ॥  
 चकोरनयना चम्पा चम्पकाकुलकुन्तला ।  
 च्युताचीराम्बरा चारुमूर्तिश्चम्पकमालिनी ॥  
 छाया छद्मकरी छिल्ली छोटिकाछिन्नमस्तका ।  
 छिन्नशीर्षा - छिन्ननासाच्छिन्नवस्त्रवरूथिनी ॥  
 छन्दिपत्ना छन्नछल्का छात्रमन्त्रानुग्राहिणी ।  
 छद्मिनी छद्मनिरता छद्मसद्यनवासिनी ॥१११॥



छायासुतहरा हव्या छलरूपा समुज्ज्वला ।  
 जया च विजया जेया जयमण्डलमण्डिता ॥  
 जयनाथप्रिया जप्या जयदा जयवर्धिनी ।  
 ज्वालमुखी महाज्वाला जगन्नाथपरायणा ॥  
 जगद्धात्री जगद्धत्री जगतामुपकारिणा ।  
 जालन्धरी जयन्ती च जम्बाराविवरप्रदा ॥  
 झिल्ली झाङ्कारमुखरा झरीझङ्कारिता तथा ।  
 जनरूपा महाजमी जहस्ता जिवलोचना ॥  
 टङ्कारकारिणी टीका टिकाटङ्कायुधप्रिया ।  
 ठकुराङ्गी ठलाश्रया ठकारत्रयभूषणा ॥१२०॥  
 डामरी डमरुप्रान्ता डमरुप्रहितोन्मुखी ।  
 ढिली ढकारवा चाटा ढभूषा भूषितानना ॥  
 णान्ता णवर्णसम्युक्ता णेयाणेयविनाशिनी ।  
 तुलात्र्यक्षा त्रिनयना त्रिनेत्रवरदायिनी ॥  
 तारतारवयातुल्या तारवर्णसमन्विता ।  
 उग्रतारा महातारा तोतुलातुलविक्रमा ॥  
 त्रिपुरात्रिपुरेशानी त्रिपुरान्तकरोहिणी ।  
 तन्त्रैकनिलया त्र्यश्रा तुषारांशुकलाधरा ॥

तपः प्रभावदा तृषा तपसातापहारिणी ।  
 तुषारपूणस्या तुहिनाद्रिसुतातुषा ॥१२५॥  
 तालायुधा तार्क्षवेगा त्रिकूटा त्रिपुरेश्वरी ।  
 थकारकण्ठनिलया थाली थली थवर्णजा ॥  
 दयात्मिका दीनरवा दुःखदारिद्र्यनाशिनी ।  
 देवेशी देवजननी दशविद्यादयाश्रया ॥  
 द्युननी दैत्यसंहर्त्री दौर्भाग्यपदनाशिनी ।  
 दक्षिणकालिका दक्षा दक्षयज्ञविनाशिनी ॥  
 दानवादानवेन्द्राणी दान्तादम्भविर्वजिता ।  
 दधीचवरदा दुष्टदैत्यदर्पापहारिणी ॥  
 दीर्घनेत्रा दीर्घकचा दुष्टारपदसंस्थिता ।  
 धर्मध्वजा धर्ममयी मधराजवरप्रदा ॥१३०॥  
 धनेश्वरी धनिस्तुत्या धनाध्यक्षा धनात्मिका ।  
 धीः ध्वनिः धवलाकारा धवलाम्भोजधारिणी ॥  
 धीरसूः धारिणी धात्री पूः पुनी च पुनीस्तुषा ।  
 नवीना नूतना नव्या नलिनायतलोचना ॥

नरनारायणस्तुत्या      नागहारविभूषणा ।  
 नवेन्दुसन्निभा      नाम्ना      नागकेसरमालिनी ॥  
 नृवन्द्या      नगरेशानी      नायिकानायकेश्वरी ।  
 निरक्षरा      निरालम्बा      निर्लोभा      निरयोनिजा ॥  
 नन्दजा      नंगदर्पाद्या      निकन्दा      नरमुण्डिनी ।  
 निन्दा      नन्दफलानष्टा      नन्दकर्मपरायणा ॥  
 नरनारीगुणाप्रीता      नरमालाविभूषणा ।  
 पुष्पायुधा      पुष्पमाला      पुष्पबाणा      प्रियंवदा ॥  
 पुष्पबाणप्रियंकरी      पुष्पधामविभूषिता ।  
 पुण्यदा      पूर्णिमा      पूता      पुण्यकोटिफलप्रदा ॥  
 पुराणागममन्त्राद्या      पुराणपुरुषाकृतिः ।  
 पुराणगोचरापूर्वा      परब्रह्मस्वरूपिणी ॥  
 परापररहस्याङ्गा      प्रह्लादपरमेश्वरी ।  
 फाल्गुणी      फाल्गुणप्रीता      फणिराजसमचिता ॥  
 फणप्रदा      च      फणेशी      फणाकारा      फणोत्तमा ।  
 फणिहारा      फणिगतिः      फणिकाञ्ची      फलाशना । १४०  
 बलदा      बाल्यरूपा      च      बालराक्षर      मंत्रिता ।  
 ब्रह्मज्ञानमयी      ब्रह्मवाञ्छा      ब्रह्मपदप्रदा ॥



ब्रह्माणी बृहतिः ब्रीडा ब्रह्मावर्तप्रवर्तनी ।  
 ब्रह्मरूपा पराव्रज्या ब्रह्ममुण्डकमालिनी ॥  
 बिन्दुभूषा बिन्दुमाता बिम्बोष्ठी बगुलामुखी ।  
 ब्रह्मस्त्रविद्या ब्रह्माणी ब्रह्माच्युतनमस्कृता ॥  
 भद्रकाली सदाभद्री भीमेशी भुवनेश्वरी ।  
 भैरवाकारकल्लोला भैरवी भैरवाचिता ॥  
 भानवी भासुदाम्भोजा <sup>स</sup>क्रासुदास्यभयार्तिहा ।  
 भीडा भागीरथी भद्रासुभद्रा भद्रवर्धिनी ॥  
 महामाया महाशान्ता मातङ्गी मीनतर्पिता ।  
 मोदकाहार संतुस्त्या मालिनी मानवर्धिनी ॥  
 मनोज्ञा चष्कुलीकर्णा मायिनी मधुराक्षरा ।  
 मायाबीजवती मानी मारीभयनिसूदिनी ॥  
 माधवी मन्दगा माध्वी मदिरारुणलोचना ।  
 महोत्साहा गणोपेता माननीया महर्षिभिः ॥  
 मत्तमातङ्गा गोमत्ता मन्मथारिवरप्रदा ।  
 मयूरकेतुजननी मन्त्रराजविभूषिता ॥  
 यक्षिणी योगिनी योग्या याज्ञकी योगवत्सला <sup>स</sup> ।  
 यशोवती यशोधात्री यक्षभूतदयापरा ॥१५०॥

यमस्वसा यमज्ञी च यजमानवरप्रदा ।  
 रात्री रात्रञ्चरज्ञी च राक्षसी रसिकारसा ॥  
 रजोवती रतिः शान्ति राजमातङ्गिनीपरा ।  
 राजराजेश्वरी राज्ञी रसस्वाद विचक्षणा ॥  
 ललनानूतनाकारा लक्ष्मीनाथसमर्चिता ।  
 लक्ष्मी च सिद्धलक्ष्मी च महालक्ष्मीललद्रसा ॥  
 लवङ्गकुसुमप्रीता लवङ्गफलतोषिता ।  
 लाक्षारुणा ललत्या च लाङ्गूलिवरप्रदायिनी ॥  
 वातात्मजप्रिया वीर्या वरदावानरीश्वरी ।  
 विज्ञानकारिणी वेण्या वरदा वरदेश्वरी ॥  
 विद्यावती वैद्यमाता विद्याहारविभूषणा ।  
 विष्णुवक्षस्थलस्था च वामदेवाङ्गवासिनी ॥  
 वामाचारप्रिया वल्ली विवस्वत्सोमदायिनी ।  
 शारदा शरदम्भोज वारिणी शूलधारिणी ॥  
 शशाङ्कमुकुटा शष्पा शेषशायिनमस्कृता ।  
 श्यामा श्यामाम्बरा श्याममुखी श्रीपतिसेविता ॥  
 षोडशी षड्रसा षड्जा षडाननप्रियङ्करी ।  
 षडङ्घ्रिकूजिता षष्टिः षोडशाम्बरभूषिता ॥

षोडशाराब्जनिलया षोडशी शोडशाक्षरी ।  
 सौ वीजमण्डिता सर्वा सर्वंगा सर्वरूपिणी ॥  
 समस्तनरकस्त्राता समस्तदुरितापहा ।  
 सम्पत्करी महासम्पत्सर्वदासर्वतोमुखी ॥  
 सूक्ष्माकरी सती सीता समस्तभुवनाश्रया ।  
 सर्वसंस्कारसम्पतिः सर्वसंस्कारवासना ॥  
 हरिप्रिया हरिस्तुत्या हरिवाहा हरीश्वरी ।  
 हलाप्रिया हलिमुखी हाटकेशो हृदेश्वरी ॥  
 ह्रीं बीजवर्णमुकुटा ह्रीः हरिप्रियकारिणी ।  
 क्षामा क्षान्ता च क्षोणी च क्षत्रियीमन्त्ररूपिणी ।  
 पञ्चात्मिका पञ्चवर्णा पञ्चतिग्मसुभेदिनी ।  
 मुक्तिदा मुनिवनेशी शाण्डिल्य वरदायिनी ॥  
 ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं च पञ्चार्ण देवता श्रीसरस्वती ।  
 ॐ सौः ह्रीं श्रीं शरद्वीजशीर्षा नीलसरस्वती ॥  
 ॐ ह्रीं क्लीं सः नमो ह्रीं ह्रीं स्वाहा बीजा च  
 शारदा ॥

— : ॐ नम इति :—



## अथ फलश्रुतिः

शारदानामसाहस्रं मन्त्रं श्री भैरवोदितम् ।  
गुह्यं मन्त्रात्मकं पुण्यं सर्वस्वं त्रिदिवौकसाम् ॥  
यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणुयात् श्रावयेदपि ।  
दिवारात्रौ च सन्ध्यायां प्रभाते च सदापुमान् ॥  
गोगजाश्वरथैः पुण्यं गेह तस्य भविष्यति ।  
दासीदासजनैः पूर्णं पुत्रपौत्रसमाकुलम् ॥  
श्रेयस्करं सदा देवि साधकानां यशस्करम् ।  
पठेन्नामसहस्रं तु निशीथे साधकोत्तमः ॥  
सर्वरोगप्रशमनं सर्वदुःखनिवारणम् ।  
पापरोगादि दुष्टानां सञ्जीव निर्मलंपरम् ॥  
यः पठेत्भक्तियुक्तस्तु मुक्तकेशोदिगम्बर ।  
सर्वागमे सः पूज्यः स्यात्स विष्णुः समहेश्वर ॥  
बृस्पतिसमोवाचो नीत्या शङ्कर सन्निभः ।  
गत्या पवनसंकाशो मत्या शुक्रसमोऽपि च ।  
तेजसा दिव्य संकाशो रूपेण मकरध्वजः ॥

ज्ञानेन च शुक्रो देवि चायुषा भृगुनन्दनः ।  
 साक्षात्सः परमेशानी प्रभुत्वेन सुराधिपः ॥  
 विद्याधिषणया कीर्त्या रामो रामो बलेन च ।  
 स दीर्घायुः सुखी पुत्री विजयी विभवो विभुः ॥  
 नान्य चन्ता प्रकतव्या नान्यचिन्ता कदाचना । १०  
 वातस्तम्भं जलस्तम्भं चौरस्तम्भं महेश्वरी ।  
 वह्निशैत्यं करोत्येव पठनं चास्य सुन्दरि ॥  
 स्तम्भयेदपि ब्रह्माणां मोहयेदपि शङ्करम् ।  
 वश्ययेदपि राजानां शमयेद्धव्यवाहनम् ॥  
 आकर्षयेद्देवकन्या उच्चाटयति वैरिणम् ।  
 मारयेदपकीर्तिं स वशयेच्च चतुर्भुजम् ॥  
 किं किं न साधयत्येवं मन्त्रनामसहस्रकम् ।  
 शरत्काले निशीथे च भौमे शक्तिः समन्वित ॥  
 पठेन्नाम सहस्रं च साधकः किं न साधयेत् ।  
 अष्टम्यामाश्वमासे तु मध्याह्ने मूर्तिसन्निधौ ॥  
 पठेन्नाम सहस्रं तु मुक्तकेशो दिगम्बरः ।  
 सुदर्शनो भवेदाशु साधकः पर्वतात्मजे ॥

अष्टम्यां सर्वरात्रं तु कुंकुमेन च चन्दनैः  
 रक्तचन्दन युक्तेन कस्तूर्या चापि यावकैः  
 मृगनाभि मनः शिल्का कल्कयुक्तेन वारिणा  
 लिखेद्भुजे जपेन्मन्त्रं साधको भक्तिपूर्वकम्  
 धारयेन्मूर्ध्नि वा बाह्वौ योषिद् वामकरे शिखे  
 रणे रिपून्विजित्यासु मातङ्गानिव केशरी  
 स्वगृहं क्षणमायाति कल्याणी साधकोत्तमः  
 बन्ध्या वामभुजे धृत्वा चतुर्थेऽहनि पार्वति  
 अमायां रविवारे यः पठेत्प्रेतालये तथा  
 त्रिवारं साधको देवि भवेत्सुत कवीश्वरः  
 सक्रान्तौ ग्रहणे वापि पठेन्मन्त्रं नदीतटे  
 स भवेत्सर्वशास्त्रज्ञो वेदवेदाङ्गतत्त्ववित्  
 शारदाया इदं नाम्नां सहस्रं मन्त्रगर्भकम्  
 गोप्यं गुह्यं सदागोप्यं सर्वधर्मैकसाधनम्  
 मन्त्र कोटिमयं दिव्यं तेजोरूपं परात्परम्  
 अष्टम्यां च नवम्यां च चतुर्दश्यां दिनेदिने  
 संक्रान्तौ मङ्गले रात्र्यां यो अर्चयेच्छारदा सुधीः  
 त्रयस्त्रिंशत्सु कोटीनां देवानां तु महेश्वरी ॥



ईश्वरि शारदा तस्य मातेवहितकारिणी ।  
 जपेत्पठते नाम्नां सहस्रं मनसा शिवे ॥  
 भवेच्छारदा पुत्रः साक्षात्भैरवसन्निभ ।  
 नाम्नां सहस्रं तु कथितं हितकाम्यया ॥  
 इदं अस्या प्रभावमतुलं जन्म जन्मान्तरेष्वपि ।  
 न शक्यते मयाऽख्यातुं कोटिशो वदनैरपि ॥  
 अदातव्यमिदं देवी दुष्टानामतिभाषिणाम् ।  
 अकुलीनाय दुष्टाय दीक्षाहीनाय सुन्दरी ॥  
 अवक्तव्यं अश्रोतव्यमिदं नामसहस्रकम् ।  
 अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो न दातव्यं कदाचन । ३० ।  
 शान्ताय गुरुभक्ताय कुलीनाय महेश्वरि ।  
 स्वशिष्याय प्रदातव्यमित्याज्ञा परमेश्वरि ॥  
 इदं रहस्यं परमं देवि भक्त्या मयोदितम् ।  
 गोप्यं रहस्यं च गोप्तव्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे पार्वतीपरमेश्वर  
 संवादे श्रीशारदासहस्रनाम स्तवराज  
 संपूर्णम् ।

—: श्रीशारदाविजयतेतराम् :—

## श्रीशारदायै नमः

ॐ जय मेधा शक्ते ! अम्बे जय मेधा शक्ते !  
 हमनित ज्योति जगावे तेरे चरणनमें ॥ ॐ जय ॥  
 हृदयनिवासिनि बुद्धिविकाशिनि अम्बे । मैं० बुद्धि  
 तूही विद्याबुद्धि जननी जगदम्बे ॥ ॐ जय ॥  
 तूही गुरुपितु माता तूही सब कुछ मेरे ॥ मैं० तू।  
 तेरे चरण पडूँ मैं मेधा पीठेशी ॥ ॐ जय ॥  
 चाप शरघण्टिका सुधा रत्नकलश भरे । मैं० रत्न  
 षडभुजधारी शक्ते चन्द्रबदनसोहे ॥ ॐ जय ॥  
 सुरनरकिन्नरनाचे बाजेतालमृदंगो ॥ मैं० बाजे ॥  
 रिमिशिमि नूपुर बाजे शहनाईसाजे ॥ ॐ ॥  
 ब्रह्मा विष्णु महेश सुरेश भैरव भैरवि रे । मैं० भैरव  
 यश गावे तुमरे ही के नागबनी छतरी ॥ ॐ ॥  
 जो जन ध्यावे गावे नितपीठेश्वरकी ॥ मैं० नित  
 कहे प्रेमानन्दज सुखसम्पति पावे ॥ ॐ ॥  
 मानस आरति मेरी तुझको अरपण हो । मैं० तू ।  
 करजोरी विनितीकरे सदा करो कल्याण ॥ ॐ ॥  
 ॐ जय मेधा शक्ते ! अम्बे जय मेधा शक्ते ॥  
 हम नितज्योत जगावे तेरे चरणन में ॥ ॐ ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः      ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः

ॐ ह्रीं क्लीं शारदायै नमः

ॐ ह्रीं क्लीं शारदायै नमः      ॐ शान्तिकर्यै नमः

शान्तायै	नमः	शान्त्यै	
श्रीमत्यै		श्रोक्यै	२०
श्रीशुभङ्क्यै		वीरसूदिन्यै	
शुभाशान्तायै		वेश्यावेश्यकर्यै	
शरद्वीजायै		वैश्यायै	
श्यामिकायै		वानरीवेपमान्वितायै	
श्यामकुन्तलयै		वाचाल्यै	
शोभाबत्यै		शुभगायै	
शशाङ्केश्यै	१०	शोभ्यायै	
शातकुम्भप्रकाशिन्यै		शोभनायै	
प्रताप्यायै		शुचिस्मितायै	
तापिन्यै		जगन्मत्रे	३०
ताप्यायै		जगद्घात्र्यै	
शीतलायै		जगत्पालनकारिण्यै	
शेषशायिन्यै		हारिण्यै	
श्यामायै		गदिन्यै	



ॐ गोधायै नमः  
 गोमत्यै  
 जगदाश्रयायै  
 सौम्यायै  
 याम्यायै  
 काम्यायै ४०  
 वाम्यायै  
 वाचामगोचरायै  
 ऐन्द्र्यै  
 चान्द्र्यै  
 कलाकान्तायै  
 शशिमण्डलमध्यगायै  
 आग्नेय्यै  
 वारुण्यै  
 वाण्यै  
 करुणाकरुणाश्रयायै ५०  
 नैनृत्यै  
 नृतरूपायै  
 वायव्यै  
 वाग्भवोद्भववायै

ॐ कौवेर्यै नमः  
 कूबर्यै  
 कोलायै  
 कामेश्यै  
 कामसुन्दर्यै  
 खेशान्यै ६०  
 केशिनीकारामोचन्यै  
 धेनुकामुदायै  
 कामधेनवे  
 कपालेश्यै  
 कपालकरसंयतायै  
 चामुण्डायै  
 मूल्यदामूल्यै  
 मुण्डमालाविभूषणायै  
 सुमेरुतनयायै  
 वन्द्यायै ७०  
 चण्डिकायै  
 चण्डसूदन्यै  
 चण्डांसुतैजसीमूल्यै  
 चण्डेश्यै

ॐ

चण्डविक्रमायै

नमः ॐ

रुक्मिण्यै

नमः

चातुकायै नमः

रुक्मभूषणायै

चाटक्यै

कामदायै

चच्यै

मोक्षदायै

चारुहंसायै

नन्दायै

चमत्कृत्यै

६०

नारसिंहायै - १००

ललज्जिह्वायै

नृपात्मजायै नमः

सरोजाक्ष्यै

नारायण्यै

मुण्डसूत्रे

नरोत्तुङ्गायै

मुण्डधारिण्यै

नागिन्यै

सर्वानन्दय्यै

नगनन्दिन्यै

स्तुत्यायै

नागश्रियै

सकलानन्दवर्धिन्यै

गिरिजायै

धृत्यै

गुह्यायै

कृत्यै

गुह्यकेश्यै

स्थितिमूर्त्यै

६०

गरीयस्यै

११०

द्यौवासायै

गुणाश्रयायै

चारुहंसिन्यै

गुणातीतायै

रुक्माङ्गदायै

गजराजोपरिस्थितायै

रुक्मवर्णायै

गजाकारायै

ॐ गणेशान्यै	नमः	ॐ घोररूपायै	नमः
गणगन्धर्वसेवितायै		महेशान्यै	
दीर्घकेश्यै		कोमलाकोमलालकायै	
सुकेश्यै		कल्याण्यै	
पिंगलायै		कामनाकुब्जायै	
पिंगलालकायै	१२०	कनकाङ्गदभूषितायै	१४०
भयदायै		केनाश्रयै	
भवमान्यायै		वरदाकात्यै	
भवान्यै		महामेधायै	
भवतोषितायै		महोत्सवायै	
भवबालस्यायै		विरूपायै	
भद्रधात्र्यै		विश्वरूपायै	
भीरुण्डायै		विश्वधात्र्यै	
भगमालिन्यै		पिलंपिलायै	
पौरन्ध्यै		पद्मालयै	
परञ्ज्योत्यै	१३०	महापद्मालयै	१५०
पुरन्धरसमचितायै		पुण्यापण्यजनेश्वर्यै	
पिनाकीर्तिकर्यै		जहनुकन्यायै	
कीर्त्यै		मनोज्ञायै	
केयूराढ्यामहाकचायै		मानस्यै	



ॐ	मनुपूजितायै	नमः	ॐ	धन्यायै	नमः
	कामरूपायै			धनदायै	
	कामकलायै			धनदेश्वर्यै	
	कमनीयायै			अपर्णायै	
	कलावत्यै			पर्णमिथिलायै	
	वैकुण्ठपत्न्यै	१६०		पर्णशालपरम्परायै	१८०
	कमलायै			पद्माक्ष्यै	
	शिवपत्न्यै			नीलवस्त्रायै	
	पार्वत्यै			निम्नानीलयताकिन्यै	
	काम्यस्यै			दयावत्यै	
	गारुडीविद्यायै			दयाधीरायै	
	विश्वसुवे			धैर्यभूषणभूषितायै	
	वीरसुवे			जलेश्वर्यै	
	दित्यै			भल्लहन्त्र्यै	
	माहेश्वर्यै			भल्लहस्तमलापहायै	
	वैष्णव्यै	१७०		कौमुद्यै	१९०
	ब्राह्म्यै			कौमार्यै	
	ब्राह्मणपूजितायै			कुमारीकुमुदाकरायै	
	मान्यायै			पद्मिन्यै	
	मानवत्यै			पद्मनयनायै	

ॐ कुलजायै  
 कुलकौलिकायै  
 करालायै  
 विकरालक्ष्यै  
 विस्रम्भायै  
 दुरदुराकृत्यै — २००  
 वनदुर्गायै  
 सदाचारायै  
 सदाशान्तायै  
 सदाशिवायै  
 सृष्ट्यै  
 सृष्टकर्यै  
 साधव्यै  
 मानुष्यै  
 देवकीद्युत्यै  
 वसुदायै  
 वासव्यै  
 वेणवे  
 वाराह्यै  
 अपराजितायै

नमः ॐ रोहिण्यै  
 रमणारामायै  
 मोहिन्यै  
 मधुराकृत्यै  
 शिवशक्त्यै  
 महाशक्त्यै २२०  
 शाङ्कर्यै  
 टङ्कधारिण्यै  
 शङ्कावङ्कालमालाढ्यै  
 लङ्काकङ्कणभूषितायै  
 दैत्यापहरादीप्तायै  
 दासोज्ज्वलकुचाग्रिण्यै  
 क्षान्त्यै  
 क्षोमङ्कर्यै  
 बुद्ध्यै  
 बोधाचारपरायणायै २३०  
 श्रीविद्यायै  
 भैरवीविद्यायै  
 भारत्यै  
 भयघातिन्यै

ॐ भीमायै	नमः ॐ	लोलालीलावत्यै	नमः
भीमारवायै		सूक्ष्मायै	
भैम्यै		सूक्ष्मासूक्ष्मगतिर्मत्यै	
भङ्गुरायै		वरेण्यायै	
क्षणभङ्गुरायै		वरदायै	
जित्यायै	२४०	वेण्यै	२६०
पिनाकभृतसैन्यायै		शरण्यायै	
शङ्खिन्यै		शरचापिन्यै	
शङ्खधारिण्यै		उग्रकाल्यै	
देवाङ्गनायै		महाकाल्यै	
देवमान्यायै		महाकालसमचितायै	
दैत्यसुवे		ज्ञानदायै	
दैत्यमदिन्यै		योगिध्येयायै	
देवकन्यायै		गोवत्यै	
पौलोम्यै		योगवर्धिन्यै	
रतिसुन्दरदोस्त्यै	२५०	पेशलायै	२७०
सुखिन्यै		मधुरायै	
शौकिन्यै		मायायै	
शौक्यै		विष्णुमायायै	
सर्वसौख्यविवर्धिन्यै		महोज्ज्वलायै	



ॐ वाराणस्यै

अवन्त्यै

कान्त्यै

कुक्कुरक्षेत्रसुवे

अयोध्यायै

योगसूत्राढ्यायै २८०

यादवेश्यै

यदुप्रियायै

यमहन्त्यै

यमदायै

यामिन्यै

योगवर्तिरायै

भस्मोज्ज्वलायै

भस्मशय्यायै

भस्मकाल्यै

चिताचितायै २९०

चन्द्रिकायै

शूलिन्यै

शिल्प्यायै

प्राशिन्यै

नमः ॐ चन्द्रवासिन्यै

नमः

(चन्द्रवासितायै)

पद्महस्तायै

पीनायै

पाशिन्यै

पाशमोचन्यै

सुधाकलशहस्तायै ३००

सुधामूर्त्यै

सुधामय्यै

व्यूहायुधायै

वरारोहायै

वरदात्र्यै

वरोत्तमायै

पापाशनायै

महमूर्तायै

मोहदायै

मधुरास्त्रायै

३१०

मधुपायै

साधव्यै

साल्यायै

ॐ मल्लिकायै	नमः ॐ मर्मनन्दजायै	नमः
कालिकामृग्यै	ज्येष्ठायै	
मृगाक्ष्यै	श्रेष्ठायै	
मृगाराजस्थायै	कामेष्ठवर्धिन्यै	
केशिकी नाश घातिन्यै	रौद्र्यै	
रक्ताम्बरधरायै	रुद्रस्तनायै	
रात्र्यै	रुद्रायै	३४०
३२० सुकेश्यै	शतरुद्रायै	
सुरनायिकायै	शाम्भव्यै	
सौरम्यै	श्रविष्ठायै	
सुरभ्यै	शितिकण्ठेश्यै	
सूक्ष्मायै	विमलानन्दवर्धिन्यै	
स्वयम्भुवे	कपदिन्यै	
कुसुमाचितायै	कल्पलतायै	
अम्बायै	महाप्रलयकारिण्यै	
जृम्भायै	महाकल्पान्तसंहृष्टायै	
जटाभूषा	महाकल्पक्षयङ्कुर्यै	३५०
जूटिन्यै	संवर्ताग्निप्रभासेव्यायै	
जटिन्यै	सानन्दानन्दवर्धिन्यै	
नट्यै	सुरसेनायै	

ॐ	मारेश्यै	नमः	ॐ	शाकिन्यै	नमः
	सुराक्षीववरोत्सुकायै			रुध्रायै	
	प्राणेश्वर्यै			नीलानागाङ्गनानुत्यै	
	पवित्रायै			कुन्दद्युत्यै	
	पावन्यै			कुरटायै	
	लोकपावन्यै			कान्तिदायै	
	लोकधात्र्यै	३६०		भ्रान्तिदायै	३८०
	महाशुक्लायै			भ्रमायै	
	शिशिराचलकन्यकायै			चर्वितायै	
	तमोग्नीध्वान्तसंहृत्र्यै			चर्वितागोष्ठ्यै	
	यशोदायै			गजाननसमर्चितायै	
	यशशिवन्यै			खगेश्वर्यै	
	प्रद्योतन्यै			खनीलायै	
	द्युतिमत्यै			नादिन्यै	
	धोमत्यै			खगवाहिन्यै	
	लोकचर्चितायै			चन्द्राननायै	
	प्रणवेश्यै	३७०		महारुण्डायै	३९०
	परगत्यै			महोग्रायै	
	पारावारसुतासमायै			मीनकन्यकायै	
	डाकिन्यै			मानप्रदायै	



ॐ महारूपायै	नमः	ॐ दिव्यायै	नमः
महामाहेश्वरीप्रियायै		गोमत्यै	
सरूद्रगणायै		यमुनानदयै	
महद्वक्त्रायै		विषाशायै	
महोरगभयानकायै		सरयुवे	
महाघोणायै		ताप्यै	
करेशायै —	४००	वितस्तायै	४२०
मार्जार्यै		कुङ्कुमाचितायै	
मन्मथोज्ज्वलायै		गण्डक्यै	
कर्त्र्यै		नर्मदायै	
हन्त्र्यै		गौर्यै	
पालयित्र्यै		चन्द्रभागायै	
चण्डमुण्डनिशूदिन्यै		सरस्वत्यै	
निर्मलायै		ऐरावत्यै	
भास्वत्यै		कावेर्यै	
भीमायै		शतह्लावायै	
भद्रिकायै	४१०	शतहृदायै	४३०
भीमविक्रमायै		श्वेतबाहनसेव्यायै	
गङ्गायै		श्वेतास्यायै	
चन्द्रावत्यै		स्मितभाविन्यै	

ॐ कौशाम्ब्यै	नमः	ॐ चित्राचित्राम्बरराचमवे नमः
कोशदायै		नवपुष्पसमद्रभूतायै
कोश्यायै		नवपुष्पैकहारिण्यै
काश्मीरकनकेलिन्यै		नवपुष्पससाम्बालायै
कोमलायै		नवपुष्पकुलावनायै
विदेहायै		नवपुष्पोद्भवप्रीतायै
पूः पुयै	४४०	नवपुष्पसमाश्रयायै ४६०
पुरसूदिन्यै		नवपुष्पललत्केशायै
पौरुखायै		नवपुष्पललन्मुखायै
पलापाल्यै		नवपुष्पललत्कर्णायै
पीवराङ्ग्यै		नवपुष्पललत्कट्यै
गुरुप्रियायै		नवपुष्पललन्नेत्रायै
पुरारिगृहिण्यै		नवपुष्पललन्नासायै
पूर्णायै		नवपुष्पसमाकारायै
पूर्णरूपरजस्वलायै		नवपुष्पललद्भुजायै
सम्पूर्णचन्द्रवदनायै		नवपुष्पललत्कण्ठायै
बालचन्द्रसमद्युत्यै ४५०		नवपुष्पाचितस्तन्यै ४७०
रेवत्यै		नवपुष्पललन्मध्यायै
प्रेयस्यै		नवपुष्पकुलालकायै
रेबायै		नवपुष्पललन्नाभ्यै

ॐ नवपुष्पललद्भगायै नमः ॐ  
 नवपुष्पललत्पादायै  
 नवपुष्पकुलाङ्गिन्यै  
 नवपुष्पगुणोत्पीडायै  
 नवपुष्पोपशोभितायै  
 नवपुष्पप्रियाप्रैतायै  
 प्रेतमण्डलमध्यगायै ४८०  
 प्रेतसनायै  
 प्रेतगत्यै  
 प्रेतकुण्डलभूषितायै  
 प्रेतबाहुकरायै  
 प्रेतशय्याशयनशायिन्यै  
 कुलाचारायै  
 कुलेशान्यै  
 कुलजायै (कुलकायै)  
 कुलकौलिन्यै  
 श्मशानभैरव्यै ४९०  
 कालभैरव्यै  
 शिवभैरव्यै  
 स्वयम्भूभैरव्यै  
 विष्णुभैरव्यै

सुरभैरव्यै नमः  
 कुमारभैरव्यै  
 बालभैरव्यै  
 रुरुभैरव्यै  
 शशाङ्कभैरव्यै  
 सूर्यभैरव्यै — ५००  
 वह्निभैरव्यै  
 शोभादिभैरव्यै  
 मायाभैरव्यै  
 लोकभैरव्यै  
 महोग्रभैरव्यै  
 साध्वीभैरव्यै  
 मृतभैरव्यै  
 सम्मोहभैरव्यै  
 शब्दभैरव्यै  
 रसभैरव्यै ५१०  
 सप्तस्तभैरव्यै  
 देवभैरव्यै  
 मन्त्रभैरव्यै  
 सुन्दराङ्गायै



ॐ मनोहन्यै नमः ॐ गुणदासुन्दर्यै  
 महाश्मशानसुन्दर्यै  
 सुरेशसुन्दर्यै  
 देवसुन्दर्यै  
 लोकसुन्दर्यै  
 त्र्यैलोक्यसुन्दर्यै ५२०  
 ब्रह्मसुन्दर्यै  
 विष्णुसुन्दर्यै  
 गिरीशसुन्दर्यै  
 कामसुन्दर्यै  
 गुणसुन्दर्यै  
 आनन्दसुन्दर्यै  
 वक्त्रसुन्दर्यै  
 चन्द्रसुन्दर्यै  
 आदित्यसुन्दर्यै  
 वीरसुन्दर्यै ५३०  
 वह्निसुन्दर्यै  
 पद्माक्षसुन्दर्यै  
 पद्मसुन्दर्यै  
 पुष्पसुन्दर्यै

नमः ॐ देवीसुन्दर्यै  
 पुरसुन्दर्यै  
 महेशसुन्दर्यै  
 देवीमहात्रिपुरसुन्दर्यै  
 स्वयम्भूसुन्दर्यै ५४०  
 देवीस्वयम्भूपुष्पसुन्दर्यै  
 शुक्रैकसुन्दर्यै  
 लिङ्गसुन्दर्यै  
 भगसुन्दर्यै  
 विश्वेशसुन्दर्यै  
 विद्यासुन्दर्यै  
 कालसुन्दर्यै  
 शुक्रेश्वर्यै  
 महाशुक्रायै  
 शुक्रतर्पणतपितायै ५५०  
 शुक्रोद्भवायै  
 शुक्ररसायै  
 शुक्रपूजनतोषितायै  
 शुक्रात्मिकायै

ॐ शुक्रकयै  
 शुक्रस्नेहायै  
 शुक्रिण्यै  
 शुक्रसेव्यायै  
 सुराशुक्रायै  
 शुक्रलिप्तायै ५६०  
 मनोन्मनायै  
 शुक्रहारायै  
 सदाशुक्रायै  
 शुक्ररूपायै  
 शुक्रजायै  
 शुक्रसुवे  
 शुक्ररम्यङ्ग्यै  
 शुक्राशुक्रविविधिन्यै  
 शुक्रोत्तमायै  
 शुक्रपूजायै ५७०  
 शुक्रेश्यै  
 शुक्रवल्लभायै  
 ज्ञानेश्वर्यै  
 भगोत्तुङ्गायै  
 भगमालाविहारिण्यै

नमः ॐ भगलिङ्गै करसिकायै नमः  
 लिङ्गिन्यै  
 भगमालिन्यै  
 वैन्दवेश्यै  
 भगाकारायै ५८०  
 भगलिङ्गादिशुक्रसुवे  
 वात्यात्यै  
 विनतायै  
 वात्यारूपिण्यै  
 मेघमालिन्यै  
 गुणाश्रयायै  
 गुणवत्यै  
 गुणगौरवसुन्दर्यै  
 पुष्पतारायै  
 महापुष्पायै ५९०  
 पुष्ट्यै  
 परमलघुजायै  
 स्वयम्भूपुष्पसंकाशायै  
 स्वयम्भूपुष्पपूजितायै  
 स्वयम्भूकुसुमन्यासायै  
 स्वयम्भूकुसुमाचितायै

ॐ स्वयम्भूपुष्पसरस्यै नमः  
 स्वयम्भूपुष्पपुष्पिण्यै  
 शुक्रप्रियायै  
 शुक्ररतायै —  
 शुक्रमज्जनतत्परायै  
 अपानाप्राणरुघायै  
 व्यानोदानस्वरूपिण्यै  
 प्राणदायै  
 मदिरामोदायै  
 मधुमत्तायै  
 मदोद्धतायै  
 सर्वाश्रयायै  
 सर्वगुणायै  
 अवस्थासर्वतोमुख्यै  
 नारीपुष्पसमप्राणायै  
 नारीपुष्पसमुत्सुकायै  
 नारीपुष्पलतानायै  
 नारीपुष्पस्रजार्चितायै  
 षड्गुणाषड्गुणातीतायै  
 षोडशीशशिनकलायै

६००

६१०

ॐ चतुर्भुजायै  
 दशभुजायै  
 अष्टादशभुजायै  
 द्विभुजायै  
 एकषट्कोणायै  
 त्रिकोणनिलयाश्रयायै  
 स्रोतस्वत्यै  
 महादेव्यै  
 महारौद्र्यै  
 दुरान्तकायै  
 दीर्घनासायै  
 सुनासायै  
 दीर्घजिह्वायै  
 भौलिन्यै  
 सर्वाधारायै  
 सर्वमय्यै  
 सारस्यै  
 सरलाश्रयायै  
 सहस्रनयनाप्राणायै  
 सहस्राक्षायै

नमः

६२०

६३०



ॐ	समचितायै	नमः	ॐ ईश्वर्यै	नमः
	सहस्रशीर्षायै		वाग्भव्यै	
	सुभटायै		चान्द्रयै	
	सुभाक्षायै	६४०	पौलोमिन्यै	६६०
	दक्षपुत्रिण्यै		मुनिसेवितायै	
	षष्टिकायै		उमायै	
	षष्टिचक्रस्थायै		पुनर्जायायै	
	षड्वर्गफलदायिन्यै		जारायै	
	आदित्यै		ऊष्मरुन्धायै	
	दितिरात्मने		पुनर्वसुवे	
	श्रीराद्यायै		चारुस्तुत्यायै	
	अङ्गामचक्रिण्यै		तिमिस्थान्त्यै	
	भरण्यै		जाडिनोलिप्तदेहिन्यै	
	भगविम्बाक्ष्यै	६५०	लीढायायै	६७०
	कृत्तिकायै		मूलेश्वरतरायै	
	इक्षवसावितायै		श्लिष्टायै	
	इतश्चिण्यै		मघवाचितपादुक्यै	
	रोहिण्यै		मघामोघायै	
	चेष्ट्यै		इणाक्ष्यै	
	चेष्टामृगशिरोधरायै		ऐश्वर्यपददायिन्यै	

ॐ ऐंकार्यै

नमः ॐ धर्मयै

नमः

चन्द्रमुकुटायै

धनिष्ठायै

पूर्वापालगुनिकीश्वर्यै

शतभिषजे

उत्तराफल्गुहस्तायै ६८०

पूर्वाभाद्रपदस्थानायै ७००

हस्तिसेव्यासमेक्षणायै

आतुरायै

ओजस्विन्यै

भद्रपादिन्यै

उत्साहायै

रेवतीरमणास्तुत्भायै

चित्रिण्यै

नक्षत्रेशसमचितायै

चित्रभूषणायै

कन्दर्पदपिण्यै

अम्भोजनयनायै

दुर्गायै

स्वात्यै

कुरुकुल्लाकपोलिन्यै

विशाखायै

केतकीकुसुमस्निग्धायै

जननीशिखायै

केतकीकृतभूषणायै

अकारनिलयायै ६९०

कालिकायै

७१०

नरसेव्यायै

कालरात्र्यै

ज्येष्ठदायै

कुटुम्बजनतपितायै

मूलापूर्वादिषाडेश्यै

कञ्जपत्राक्षिण्यै

उत्तराषाढाचान्यै

कल्यारोपिण्यै

श्रवणायै

कालतोषितायै

धर्मिण्यै

कर्पूरपूर्णवदनायै

ॐ

कचभारताननायै नमः

कलानाथकलामात्यै

कलायै

कलिमलापहायै ७२०

कादम्बिन्यै

करिगत्यै

करिचक्रसमर्चितायै

कञ्जेश्वर्यै

कृपारूपायै

करुणामृतवर्षिण्यै

खर्वायै

खद्योतरूपायै

खेटेश्यै

खड्गधारिण्यै ७३०

खद्योतचञ्चाकेश्यै

खेचरीखेचरार्चितायै

गदाधरीमायायै

गुर्व्यै

गुरुपुत्र्यै

गुरुप्रियायै

ॐ गीतावाद्यप्रियायै नमः

गाथायै

गजवक्त्रप्रसुवै

गत्यै ७४०

गरिष्ठायै

गणपूजायै

गूढगुल्फायै

गजेश्वर्यै

गणमान्यायै

गणेशान्यै

गाणपत्यफलप्रदायै

धर्माशुनयनायै

धर्मायै

घोराघुर्घरनादिन्यै ७५०

घटस्तन्यै

घटाकारायै

घुसृणकुलितस्तन्यै

घोरास्त्रायै

घोरमुख्यै

घोरद्वैत्यनिबर्हिण्यै



ॐ घनछायायै नमः ॐ छित्यै नमः  
 घनद्युत्यै  
 घनवाहनपूजितायै  
 टवकाटेशरूपायै ७६०  
 चतुराचतुरस्तन्यै  
 चतुराननपूज्यायै  
 चतुर्भुजसमचितायै  
 चर्माम्बरायै  
 चरगत्यै  
 चतुर्वेदमयीचलायै  
 चतुसमुद्रशयनायै  
 चतुर्दशसुरार्चितायै  
 चकोरनयनायै  
 चम्पायै ७७०  
 चम्पकाकुलकुन्तलायै  
 च्युताचीराम्बरायै  
 चारुमूर्त्यै  
 चम्पकमालिन्यै  
 छायायै  
 छद्मकर्यै

छोटिकायै  
 छिन्नमस्तकायै  
 छिन्नशीर्षायै ७८०  
 छिन्ननासायै  
 छिन्नवस्त्रावरुथिव्यै  
 छद्मिपत्रायै  
 छिन्नछल्कायै  
 छात्रमन्त्रानुग्राहिण्यै  
 छद्मिन्यै  
 छद्मनिरतायै  
 छद्मसद्मुनिवासिन्यै  
 छायासुतहरायै  
 (छव्यायै) (हव्या) ७९०  
 छलरूपसमुज्ज्वलायै  
 जयायै  
 विजयायै  
 जेयायै  
 जयमण्डलमण्डितायै  
 जयनाथप्रियायै

जप्यायै	नमः ॐ टिकाटङ्कायुधप्रियायै नमः
जयदायै	तुकुराङ्ग्यै
जयवर्धिन्यै	ठलाश्रयायै
ज्वालामुख्यै — ८००	ठकारत्रयभूषणायै ८२०
महाज्वालायै	डामयै
जगत्राणपरायणायै	डमरुप्रान्तायै
जगद्धात्र्यै	डमरुप्रहितोन्मुख्यै
जगद्धत्र्यै	ढिल्यै
जगतामुपकारिण्यै	ढकारवायै
जालन्धर्यै	चाटायै
जयन्त्यै	ढभूषाभूषिताननायै
जम्बारारिवरप्रदायै	णान्तायै
झिल्लीझङ्कारमुखायै	णवर्णसंयुक्तायै
झरीझाङ्कारितायै ८१०	णेयाणेयविनाशिन्यै ८३०
जनरूपायै	तुलात्रयक्ष्यै
महाजम्भ्यै	त्रिनयनायै
जहस्तायै	त्रिनेत्रदरदायिन्यै
जविलोचनायै	तारातारवयातुल्यायै
टङ्कारकारिण्यै	तारवर्णसमन्वितायै
टीकायै	उग्रतारायै

ॐ महातारायै

नमः

ॐ

दयात्मिकायै

नमः

तोतुलातुलविक्रमायै

दीनछायै

त्रिपुरात्रिपुरेशान्यै

दुःखदारिद्र्यनाशिन्यै

त्रिपुरान्तकरोहिण्यै ८४०

देवेश्यै

८६०

तन्त्रैकनिलयायै

देवजनन्यै

त्र्यश्रायै

दशविद्यादयाश्रयायै

तुषारांशुकलाधरायै

द्युनन्यै

तपः प्रभावदायै

दैत्यसंहार्यै

तृप्तायै

दौर्भाग्यपदनाशिन्यै

तपसातापहारिण्यै

दक्षिणकालिकायै

तुषारकरपूर्णस्यायै

दक्षायै

तुहिनाद्रिसुतातुषायै

दक्षयज्ञविनाशिन्यै

तालायुधायै

दानवादानवेद्राण्यै

ताक्ष्यवेगायै

८५०

दान्तायै

८७०

त्रिकूटायै

दम्बविवाजितायै

त्रिपुरेश्वर्यै

दधीचिवरदायै

थकारकण्ठनिलयायै

दुष्टदैत्यदर्पापहारिण्यै

थाल्यै

दीर्घनेत्रायै

थल्यै

दीर्घकचायै

थवर्णजायै

दुष्टारपदसांस्थतायै



धर्मध्वजायै	नमः ॐ	नवेन्दुसन्निभायै	नमः
धर्ममयै		नाम्नायै	
धर्मराजवरप्रदायै		नागकेसरमालिन्यै	
धनेश्वर्यै	८८०	नृबन्धायै —	६००
धनिस्तुत्यायै		नगरेशान्यै	
धनध्यक्षायै		नायिकानयिकेश्वर्यै	
धनात्मिकायै		निरक्षरायै	
धीध्वन्यै		निरालम्बायै	
धवलाकारायै		निर्लोभायै	
धवलाम्बोजधारिण्यै		निरयोनिजायै	
धीरसुधारिण्यै		नगदर्पाढ्यायै	
धात्र्यै		निकन्दायै	
धूम्रपुन्यै		नरमुण्डिन्यै	
पुनीस्तुषायै	८६०	निन्दायै	६१०
नवीनयै		नन्दफलायै	
नूतनायै		नष्टानन्दकर्मपरायणायै	
नव्यायै		नरनारीगुणप्रीतायै	
नलिनायतलोचनायै		नरमालाविभूषणायै	
नरनारायणस्तुत्यायै		पुष्पायुधायै	
नागहारविभूषणायै		पुष्पमालायै	

ॐ पुष्पबाणायै	नमः	ॐ फणाकारायै	नमः
प्रियम्बदायै		फणोत्तमायै	
पुष्पबाणप्रियंकयै		फणिहारायै	
पुष्पधामविभूषितायै ६२०		फणिगत्यै	६४०
पुण्यदायै		फणिकाञ्चयै	
पूर्णिमायै		फलाशनायै	
पूतायै		बलदायै	
पुण्यकोटिफलप्रदायै		बाल्यरूपायै	
पुराणागममन्त्राढ्यायै		बालराक्षरमन्त्रितायै	
पुराणपुरुषाकृत्यै		ब्रह्मज्ञानमय्यै	
पुराणगोचरायै		ब्रह्मवाञ्छायै	
पूर्वायै		ब्रह्मपदप्रदायै	
परब्रह्मस्वरूपिण्यै		ब्रह्माण्यै	
परम्पररहस्याङ्गायै ६३०		बृहत्यै	६५०
प्रह्लादपरमेश्वर्यै		ब्रोडायै	
फाल्गुण्यै		ब्रह्मावर्तप्रवर्तिन्यै	
फाल्गुणप्रीतायै		ब्रह्मरूपायै	
फणिराजसमर्चितायै		पराव्रज्यायै	
फणप्रदायै		ब्रह्ममुण्डैकमालिन्यै	
फणेश्यै		बिन्दुभूषायै	

ॐ बिन्दुमात्रे	नमः	ॐ महामायायै	नमः
विम्बोष्ठ्यै		महाशान्तायै	
वगुलामुख्यै		मातङ्ग्यै	
ब्रह्मास्त्रविद्यायै ६६०		मीनतर्पितायै ६८०	
ब्रह्माण्यै		मोदकाहारसंतुष्ट्यायै	
ब्रह्माच्युतनमस्कृतायै		मालिन्यै	
भद्रकाल्यै		मानवर्धिन्यै	
सदाभद्रायै		मनोज्ञायै	
भीमेश्यै		शङ्कुलीकर्णायै	
भुवनेश्वर्यै		मायिन्यै	
भैरवाकाकल्लोलायै		मधुराक्षरायै	
भैरवीभैरवाचितायै		मायाबीजवत्यै	
मानव्यै		महामार्यै	
भासुदाम्भोजायै ६७०		भयनिसूदिन्यै ६९०	
भासुदास्यभयार्तिहायै		माधव्यै	
भीडायै		मन्दगायै	
		माधव्यै	
भागीरथ्यै		मदिरारूणलोचनायै	
भद्रायै		महोत्साहायै	
सुभद्रायै		गणोपेतायै	
भद्रवर्धिन्यै		माननीयामहर्षिभ्यै	



ॐ मत्तमातङ्गायै	नमः	ॐ राजमातङ्गिनीपरायै नमः
गोमत्तायै		राजराजेश्वर्यै
मन्मथारिवरप्रदायै १०००		राज्ञ्यै २०
मयूरकेतुजनन्यै		रसास्वादविचक्षणायै
मन्त्रराजविभूषितायै		ललनानूतनाकारायै
यक्षिण्यै		लक्ष्मीनाथसमर्चितायै
योगिन्यै		लक्ष्यै
योग्यायै		सिद्धलक्ष्म्यै
याज्ञकीयोगवत्सलायै		महालक्ष्मीललद्रसायै
यशोवत्यै		लवङ्गकुसुमप्रीतायै
यशोधात्र्यै		लवङ्गफलतोषितायै
यक्षभूतदयापरायै		लाक्षारुणायै
यमस्वसायै	१०	ललत्यायै ३०
यमज्ञ्यै		लाङ्गुलिवरदायिन्यै
यजमानवरप्रदायै		वातात्जप्रियायै
रात्र्यै		बीर्यायै
रात्रिञ्चरज्ञ्यै		वरदावानरीश्वर्यै
राक्षसीरसिकारसायै		विज्ञानकारिण्यै
रजोवत्यै		वेण्यायै
रतिशान्त्यै		वरदायै

ॐ

वरदेश्वर्यै

नमः ॐ

षड्जायै

नमः

विद्यावत्यै

षडाननप्रियङ्गुयै

वैद्यमात्रे

४०

षडंघ्रिकूजितायै

६०

विद्याहारविभूषणायै

षष्ट्यै

विष्णुवक्षस्थलस्थायै

षोडशाम्बरभूषितायै

वामदेवाङ्गवासिन्यै

षोडशाराब्जनिलयायै

वामाचारप्रियायै

षोडश्यै

वत्स्यै

षोडशाक्षर्यै

विवत्त्वन्सोमदायिन्यै

सौ बीजमण्डितायै

शारदायै

सर्वस्यै

शरदम्भोजवारिण्यै

सर्वगासर्वरूपिण्यै

शूलधारिण्यै

समस्तनरकस्त्रातायै

शशाङ्कमुकुटायै ५०

समस्तदुरितापहायै ७०

शष्पायै

सम्पत्क्यै

शेषशायिनमस्कृतायै

महासम्पत्ते

श्यामाश्यामाम्बरायै

सर्वदायै

श्याममुख्यै

सर्वतोमुख्यै

श्रीपतिसेवितायै

सूक्ष्माक्यै

षोडश्यै

सतीसीतायै

षड्रसायै

समस्तभुवनाश्रयायै

ॐ सर्वसंस्कारसम्पद्यै नमः	ॐ ह्रीः हरप्रियकारिण्यै नमः
सर्वसंस्कारवासनायै	क्षामायै ६०
हरिप्रियायै ८०	क्षान्तायै
हरिस्तुत्यायै	श्रोण्यै
हरिवाहायै	क्षत्रिणीमन्त्ररूपिण्यै
हरीश्वर्यै	पञ्चात्मिकायै
हालाप्रियायै	पञ्चवर्णायै
हलिमुख्यै	पञ्चतिग्मायै
हाटकेश्यै	सुभेदिन्यै
हृदयेश्वर्यै	मुक्तिदायै
ह्रीं बीजमुकुटायै	मुनिवनेश्वर्यै

ॐ शाण्डिल्यवरदायिन्यै नमः १००

ॐ नम इति

श्रीदेव्यार्पणमस्तु





---

---

श्री श्री शैलस्थिताया प्रहरित वदना पार्वती शूल हस्ता ।  
बलि सूर्येन्दु नेत्रा त्रिभुवन जननी षड्भुजा सर्वशक्तिः ।  
शाण्डिल्येनोपनीता जयति भगवती भक्तिगम्या नतानाम् ।  
सा नः सिंहासहनस्था ह्यभिमत फलदा शारदा शं करोतु ॥

---

---

मुद्रक :  
श्रीहरिनाम प्रेस, बाग बुन्देला, वृन्दावन - 281121











